'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 9 19 जुलाई, 2019 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

श्री प्रताप फाउण्डेशन

ए-8 तारा नगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302012
दूरभाष 0141-2466353
e-mail : sanghshakti@gmail.com

क्रमांक 19/127 दिनांक 11.07.2019

माननीय अशोक जी गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार
जयपुर

माननीय सचिन जी पायलट
प्रदेशाध्यक्ष, कांग्रेस पार्टी (राजस्थान)

सादर नमस्कार,

स्वतंत्रता के बाद से ही राजपूत समाज के अनेक लोग राज्य में कांग्रेस पार्टी के लिए काम करते रहे हैं, लेकिन आम धारणा यह बनी रही कि राजपूत समाज कांग्रेस के साथ नहीं है और आम राजपूत व कांग्रेस के बीच दूरियां हैं। विगत वर्षों में सामाजिक संगठनों द्वारा इन दूरियों को पाटने का गंभीर प्रयास किया गया। इसका सकारात्मक परिणाम भी निकला और आम राजपूत मतदाता का कांग्रेस के प्रति दुराव कम हुआ। लेकिन दुर्भाग्य से कांग्रेस की तरफ से इस दिशा में विशेष प्रयास नजर नहीं आ रहा।

अभी हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा आरक्षण से वंचित आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण का प्रावधान कर यह निर्देशित किया गया कि राज्य सरकारें अपने राज्य की परिस्थिति अनुसार इसकी शर्तों में परिवर्तन कर सकेंगी। लेकिन आपकी सरकार ने कृषि जोत, आवासीय भूखण्ड, मकान आदि की राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में अव्यवहारिक शर्तों को बरकरार रखते हुए आदेश जारी कर दिए। जबकि पड़ोसी राज्य गुजरात ने समस्त स्रोतों से आठ लाख वार्षिक आय की शर्त के अलावा शेष सभी शर्तें हटा दी। साथ ही सभी प्रकार के आरक्षण में नौकरी आदि में अधिकतम आयु में छूट दी जाती है लेकिन इस आरक्षण में ऐसा कोई प्रावधान नहीं किया गया।

अति पिछड़े वर्गों एवं आर्थिक कमजोर वर्गों के लिए आपकी सरकार ने लगभग एक साथ आरक्षण के आदेश जारी किए लेकिन अति पिछड़े वर्ग को प्रक्रियाधीन भर्तियों, जिनकी पूर्व में परीक्षा हो चुकी है, में भी आरक्षण दिया गया जबकि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को नहीं दिया गया।

माननीय ! यह सब बातें आम राजपूत तक जाती हैं तो एक निराशा का वातावरण तैयार होता है। नीचे तक संदेश यह जा रहा है कि आपकी सरकार इस वर्ग की न्यायसंगत मांगों पर भी संज्ञान नहीं लेती। इस संदेश से सामाजिक संगठनों द्वारा आम राजपूत व कांग्रेस पार्टी के बीच व्याप्त दूरियों को दूर करने के अभियान को ठेस पहुंचती है। अत: आप से निवेदन है कि इस वर्ग के अंतिम पायदान तक जा रहे इस नकारात्मक संदेश को रोकने में सहयोग करें एवं इस वर्ग की न्याय संगत मांगों पर संज्ञान लेकर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को मिले आरक्षण की शर्तों में से कृषि जोत, आवासीय भूखण्ड एवं मकान की शर्त हटाते हुए केवल आठ लाख वार्षिक आय की शर्त ही रखें। इस आरक्षण में भी अधिकतम आयु के छूट का प्रावधान भी लागू करवाएं। साथ ही एम बी सी की तरह प्रक्रियाधीन भर्तियों में भी इस आरक्षण को लागू करवाएं। इससे आपकी सरकार के प्रति सकारात्मक संदेश जायेगा जो परस्पर सहयोग के लिए आवश्यक है।

विनीत

महावीर सिंह सरवड़ी
संयोजक, प्रताप फाउण्डेशन

जन प्रतिनिधियों से मिलने का क्रम जारी

आर्थिक आधार पर कमजोर वर्ग को दिए गए आरक्षण में भूमि, आवासीय भूखण्ड आदि की अव्यवहारिक शर्तों को हटवाने के लिए जनप्रतिनिधियों से सहयोग मांगने का क्रम लगातार जारी है। जुलाई में जयपुर टीम के सहयोगी परिवहन मंत्री प्रतापसिंह खाचरियावास से मिले एवं सहयोग मांगा। बीकानेर टीम के सहयोगी 2 जुलाई को जल संसाधन व ऊर्जा मंत्री बी.डी. कल्ला से मिले एवं विसंगतियों को दूर करने की मांग मुख्यमंत्री जी तक पहुंचाने में सहयोग मांगा। (शेष पृष्ठ 3 पर)

विरासत बचाने का सुंदर संघर्ष

दौसा जिले के बसवा गांव स्थित महाराणा सांगा के चबूतरे के जीर्णोद्धार का कार्य 11 जुलाई को अपरान्ह 1.15 बजे भूमि पूजन के साथ प्रारंभ हुआ। तीन चरणों में इस स्मारक का विकास किया जाएगा। प्रथम भाग का कार्य 11 जुलाई को आरंभ हुआ। इस चरण में स्मारक स्थल के लिए चिह्नित भूमि की चार दीवारी का निर्माण व पीने के पानी के बोरिंग का कार्य किया जाएगा। अन्य दो चरणों में भूमि का भराव करना, गार्ड रूम बनाना, चबूतरे पर मार्बल व रेलिंग लगाकर जीर्णोद्धार करना, स्थान को वृक्षारोपण कर बगीचे का स्वरूप देना एवं उक्त भूमि में महाराणा सांगा की गजारूढ़ व उनके सेनापति हसन खां मेवाती की अश्वारूढ़ प्रतिमा लगाने का कार्य किया जाएगा। (शेष पृष्ठ 3 पर)

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के बढ़ते कदम

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के संदेश के प्रत्येक समाज बंधु तक पहुंचाने के अभियान के तहत 29 जून को शिव तहसील के समाज बंधुओं की बैठक शिव ब्राईट स्कूल शिव के प्रांगण में रखी गई। 29 जून की शाम को पोकरण स्थित श्री दयाल राजपूत छात्रावास में पोकरण व फलोदी क्षेत्र के समाज बंधुओं की बैठक रखी गई। दोनों ही स्थानों पर फाउण्डेशन के उद्देश्यों एवं कार्य प्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। आर्थिक आधार पर कमजोर वर्ग को मिले आरक्षण के बारे में भी विस्तार से बताया गया एवं पात्र लोगों के अधिक से अधिक प्रमाण पत्र बनवाने का आग्रह किया गया। जागरुकता के अभाव में इसके प्रति उदासीनता के कारण समाज को हो रही हानि के बारे में विस्तार से चर्चा की गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

हमारे प्रणेता पूज्य तनसिंहजी ने अपनी पुस्तक 'साधना पथ' के प्रथम अध्याय 'बलिदान का सिद्धांत' के 11वें अवतरण में लिखा है : ''आंधियां आयें और जो झुके नहीं, तूफान आवें पर जो टूटे नहीं; आहें और आंसू जो निकलें, तो उन्हें पीकर मुस्करा दे; नफरत के प्याले पीकर जो उन्हीं प्यालों में प्रेम का जल भर कर मनुहार करते हों, संसार उन्हीं के अप्रत्याशित व्यवहार को देखने के लिए रुका करता है।'' इन पंक्तियों को हम पढ़ते हैं तो हमें लगता है कि उन्होंने असंभव सी कल्पना कर ली है। क्या कभी ऐसा भी हो सका है कि नफरत के प्यालों में प्रेम का जल भर कर मनुहार की जा सके? प्राय: ऐसा नहीं होता है इसीलिए तो उन्होंने लिखा कि यह अप्रत्याशित व्यवहार है। इसे सामान्य व्यवहार नहीं कहा जा सकता। वास्तव में यह सामान्य लोगों के बस से बाहर की बात है। लेकिन पूज्यश्री ने तो यह सब सामान्य लोगों के लिए नहीं लिखा है। वे तो अपने आस-पास के सामान्य लोगों को असामान्य बनाने का ही तो उपक्रम कर रहे थे इसलिए उनकी अपेक्षा सामान्य कैसे हो सकती थी। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि जो लिखा जा रहा है क्या वह संभव है? क्या यह व्यवहारिक भी है? तो पूज्य तनसिंह जी ने जैसी अपेक्षा अपने साथियों से की, जैसा वे अपने साथियों को बनाना चाहते थे वैसा उन्होंने पहले अपने आपको बनाकर बताया। उन्होंने सदैव स्वयं का उदाहरण पेश किया और तदुपरांत साथियों को अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। ऐसी ही एक घटना का उल्लेख यहां किया जा रहा है जो इनकी लिखी इस पंक्ति को पुष्ट करती है कि 'नफरत के प्याले पीकर जो उन्हीं प्यालों में प्रेम का जल भरकर मनुहार करते हों, संसार उन्हीं के अप्रत्याशित व्यवहार को देखने के लिए रुका करता है।' एक स्वयंसेवक अपने आपको पूज्य श्री का अतिप्रिय मानते थे। पूज्य श्री भी उनकी इस भावना का मान रखने के लिए सदैव उनका ध्यान रखते थे। यहां तक कि वे कहां काम कर रहे हैं, वहां की परिस्थितियां उनके अनुकूल हैं या नहीं, वे प्रसन्न हैं या नहीं आदि सब बातों को ध्यान रखते थे। एक बार उन्हें किसी स्वयंसेवक के पास काम करने भेजा, उन्होंने उन्हें आगे किसी अन्य के पास भेज दिया तो पूज्य श्री ने उलाहना दिया कि मैंने तो उसे तुम्हारे पास भेजा था कि वह सुख से रहेगा और तुमने उसे आगे भेज दिया। कुल मिलाकर वे उन स्वयंसेवक कि इस भावना का पूरा ध्यान रखते थे कि वे पूज्यश्री के प्रिय हैं। एक बार पूज्य श्री उनके साथ रहने वाले स्वयंसेवकों के साथ बैठे थे, इतने में उक्त स्वयंसेवक आये और सभी के बीच पूज्यश्री को अपशब्द कहने लगे। साथ में बैठे सभी लोग हतप्रभ रह गए कि ऐसा कैसे हो गया? कुछ को क्रोध भी आया, लेकिन पूज्यश्री निर्विकार भाव से उठे और पास में पड़े पानी के मटके से लोटा भरकर हथेली में रखकर उन स्वयंसेवक को पेश किया और निवेदनपूर्वक कहा कि तुम बहुत गुस्से में हो, ठंडा पानी पी लो। यह था उनका अप्रत्याशित व्यवहार। जहां साथ में बैठे सभी लोग हतप्रभ थे वहीं पूज्य श्री के चेहरे पर न क्रोध था, ना व्यंग्य था और ना ही आश्चर्य था। बस सहज भाव से ठंडे जल की मनुहार का प्रेम था। यही उनकी शक्ति थी जिसके बल पर अगणित बिंदु परस्पर मिलकर एकता की धारा बनी।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

विगत अंको में हमने जीव विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य विषय वर्ग के विद्यार्थियों हेतु 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उपलब्ध कैरियर विकल्पों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। अब हम कला वर्ग अथवा मानविकी विषयों के विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध विकल्पों के बारे में चर्चा करेंगे। यद्यपि विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग की तुलना में कला वर्ग को विद्यार्थियों द्वारा कम महत्व दिया जाता है तथापि कला वर्ग के विषयों का अध्ययन करके एक उच्च स्तरीय कैरियर बनाया जा सकता है। कला वर्ग के अंतर्गत चयन हेतु अनेकों विषय उपलब्ध हैं जिनमें इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अंग्रेजी साहित्य, हिंदी साहित्य, संस्कृत, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, ललित कलाएं, शारीरिक शिक्षा आदि मुख्य हैं। कला वर्ग से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उपलब्ध कुछ प्रमुख कोर्स/डिग्री निम्नलिखित हैं

1. बैचलर ऑफ आर्ट्स
2. बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
3. बैचलर ऑफ मैनेजमेंट साइंस
4. बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स
5. बैचलर ऑफ होटल मैनेजमेंट
6. बैचलर ऑफ इवेंट मैनेजमेंट
7. इंटीग्रेटेड लॉ कोर्स (बी.ए.एल.एल.बी.)
8. बैचलर ऑफ जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
9. बैचलर ऑफ फैशन डिजाइनिंग
10. बैचलर ऑफ एलीमेंटरी एजुकेशन
11. बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन
12. डिप्लोमा इन एलीमेंटरी एजुकेशन
13. बैचलर ऑफ सोशल वर्क
14. एनिमेशन एंड मल्टीमीडिया कोर्स
15. बैचलर ऑफ रिटेल मैनेजमेंट
16. बैचलर ऑफ बिजनेस स्टडीज
17. बैचलर ऑफ ट्रैवल एंड टूरिज्म मैनेजमेंट

क्रमश:

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

महारानी तृप मान की

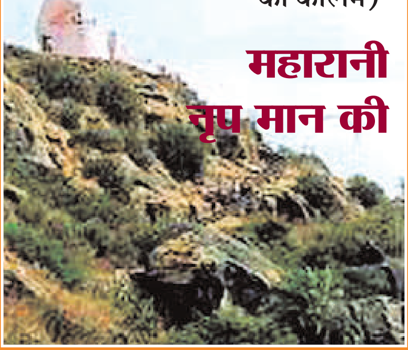

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

जयपुर रियासत के अंतिम महाराजा सवाईमानसिंह द्वितीय ने तीन विवाह किये थे। पहली दो महारानियां जोधपुर रियासत की राजकुमारियां (बुआ और भतिजी) थी। उनकी तीसरी शादी कुच बिहार (बंगाल) के महाराज जितेन्द्र नारायण की पुत्री गायत्री देवी से हुई थी। गायत्री देवी की माता बड़ौदा (गुजरात) के प्रसिद्ध शासक महाराजा सियाजी राव गायकवाड़ तृतीय की इकलौती पुत्री इन्द्रा राजे थी। गायत्री देवी का जन्म 23 मई 1919 को इंग्लैंड में हुआ था। इन्होंने रविन्द्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन एवं स्वीट्जरलैंड से शिक्षा पायी। शांति निकेतन में इंदिरा गांधी आपकी सहपाठी रही थी। अपनों के मध्य 'आयशा' के नाम से प्रसिद्ध गायत्री देवी का बचपन कूच बिहार के आलीशान 500 नौकर-चाकरों से भरे राजप्रसाद में बीता। घुड़सवारी, तैराकी, टेनिस, पोलो व शिकार का शौक रखने वाली गायत्री देवी जब जयपुर से महारानी बनी तब तीन हजार करोड़ से ज्यादा की सम्पत्ति की मालकिन बनी। वे सौन्दर्य की अप्रतीम प्रतिभा थी। अमेरिकी पत्रिका 'वोग' ने दुनिया की सबसे खूबसूरत दस महिलाओं में शामिल किया था। उनके पहनावे (मुख्यत: साड़ीयां एवं गहने) की स्टाइल की दुनिया दिवानी थी। परन्तु उन्होंने इसे कभी भी प्रदर्शनी की वस्तु बनने नहीं दिया। उनके बड़े राजसी ठाठ को देखते हुए भी लोग उनकी गरिमा तथा शालीनता के कायल थे। उन्हें इस सबका अहंकार कभी भी छू नहीं पाया। आप 1940 में महाराजा सवाई मानसिंह की तीसरी शादी के बाद जयपुर की महारानी बनकर आयी तो राजपूताना की महिलाओं में प्रचलित पर्दा प्रथा का पुरजोर विरोध किया। तथा खुद ने कभी पर्दा नहीं अपनाया- ऐसा यहां के राजघरानों में पहली बार हुआ। आपने राजपूत महिलाओं को पहली बार पर्दा त्याग कर शिक्षित होने की वकालात की। 1943 में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये विश्व

प्रसिद्ध अंग्रेजी माध्यम महारानी गायत्री देवी स्कूल (एन.जी.डी.) की स्थापना की। आपने जगा की बावड़ी में वंचित बच्चों की शिक्षा के लिए अपनी पोती के नाम से निशुल्क शिक्षा हेतु 'लालित्या कुमारी' स्कूल तथा डिसेबल (असहाय विकलांग) बच्चों के लिये 'दिशा' नाम से शिक्षा संस्थान खोला। 1984 में प्रसिद्ध अंग्रेजी माध्यम से सह शिक्षा हेतु महाराजा मानसिंह स्कूल खोला। आपने अपने राजसी एवं सामाजिक जीवन पर सुंदर चित्रों से सज्जित विश्व प्रसिद्ध पुस्तक 'ए प्रिंसेज रिमेम्बरेंस' लिखी।

आप भारत के अंतिम गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी द्वारा स्थापित स्वतंत्र पार्टी की तरफ से 1962, 1967, 1971 में तीन बार जयपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुनी गई। 1962 में जयपुर लोकसभा से उनकी जीत (2,46,516 वैध पड़े मतों में से 1,91,909 कुल प्राप्त मत) गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है। आप प्रदेश की जनता पार्टी की सरकार के समय राजस्थान पर्यटन विभाग (आरआईडीजी) की अध्यक्षा रही। 1999 के लोकसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस की अध्यक्षता ममता बनर्जी ने आपको उनकी पार्टी से कूच बिहार (बंगाल) से लोकसभा का चुनाव लड़ने का आग्रह किया जिसे उन्होंने विनयपूर्वक ठुकरा दिया। आप में साहस एवं सूझबूझ गजब की थी। 1970 में महाराजा मानसिंह (जिन्हे वह प्यार से जय पुकारती थी) की उनकी आंखों के आगे लन्दन में पोलो खेलते हुए घोड़े से गिरने से व 1997 में अपने इकलौते पुत्र महाराज जगतसिंह को अकाल खोना पड़ा। कांग्रेस का विरोध करने के कारण 1975 में आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी ने आपको गिरफ्तार कर दिल्ली की तिहाड़ जेल में छ: माह के लिये बंद कर दिया। और उनके जयपुर के जयगढ़ किले को अकूत खजाने पर भी हाथ साफ कर दिया ऐसा लोगों का मानना है। इन सब घटनाओं से कभी भी उनकी गरिमा, धैर्य और मनोबल नहीं गिरा। अन्यथा इतनी बड़ी शख्सियत अन्य कोई होती तो टूट जाती। राजमाता के नाम से विख्यात गायत्री देवी को जयपुर शहर और जनता से अप्रतिम प्यार था। उन्हें जयपुर के हेरीटेज को संजोकर रखने की सदैव चिंता रहती थी। कई सरकारी अड़चनों के बाद भी अन्तत: 2000 में राजस्थान दिवस पर आपने नवीन जयपुर के निर्माता महाराजा सवाई मानसिंह की घुड़सवार मूर्ति अलबर्ट हॉल के सामने रामनिवास बाग में लगवायी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कार्य योजना बैठकें जारी

गुजरात के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की कार्य योजना बैठक 30 जून को संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' में रखी गई। प्रात:कालीन यज्ञ से प्रारंभ हुई बैठक अपराह्न बाद तक चली। जुलाई से दिसंबर तक के संघ कार्य की योजना बनाने के लिए रखी गई इस बैठक में 25 प्रा.प्र.शिविरों के प्रस्ताव तैयार किए गए। इनमें से 21 बालकों के व 4 बालिकाओं के शिविर हैं। दो मा.प्र.शि. तय किए गए जो बनासकांठा प्रांत में रखे जाएंगे। इनमें एक बालकों का एवं एक बालिकाओं का है। कार्यालय परिसर में नये कमरे के निर्माण के लिए सहयोग राशि की बात की गई तो सभी सहयोगियों ने अपना सहयोग अर्पित किया। गुजरात में संघ के काम को आगे बढ़ाने वाले एवं वर्तमान में कार्यालय ही रह कर वानप्रस्थ का जीवन जी रहे वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा ने अपने प्रेरणास्पद उद्बोधन में कहा कि गुजरात में संघ के काम में विगत वर्षों में संख्यात्मक रूप से अपेक्षित प्रगति हुई है। अब इसे गुणात्मक रूप से भी प्रबल बनाना है। इसके लिए सभी को अपने जीवन के प्रति गंभीर होकर उसमें संघ को उतरने का अवसर देना चाहिए ताकि हमारा जीवन ही संघ का संदेश बनकर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन सके। अंत में स्नेहभोज के साथ बैठक संपन्न हुई।

मेवाड़, वागड़ व मालवा क्षेत्र की संभागीय बैठक केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली के सान्निध्य में 30 जून को उदयपुर में संपन्न हुई। संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला के आवास पर आयोजित बैठक में संभाग प्रमुख (उदयपुर) भंवरसिंह बेमला, संभाग प्रमुख (भीलवाड़ा) बृजराजसिंह खारड़ा सहित प्रांत प्रमुख व अन्य दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बैठक में दोनों संभागों के शिविरों के स्थान व समय तय किए गए। विगत शैक्षणिक सत्र में लगी शाखाओं को नियमित करने एवं नई संभावनाओं को तलाशने को लेकर चर्चा की गई। यात्राओं, जयंतियों आदि के कार्यक्रम तय किए गए। संघशक्ति पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता को लेकर भी चर्चा की गई। सांय 6 बजे सहयोगियों के परिवारों का पारिवारिक स्नेह मिलन रखा गया जिसमें पारिवारिक भाव को बढ़ाने के लिए सांघिक चर्चा की गई।

राजपूत छात्रावास रामगढ़ (जैसलमेर) में रामगढ़ प्रांत की कार्य योजना बैठक प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ की अगुवाई में रखी गई जिसमें प्रांत में प्रस्तावित पनराजसर बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर व भोजराज की ढाणी माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर (बालक) को लेकर चर्चा की गई। संभागीय बैठक में हुई चर्चा के अनुसार प्रांत में लगने वाली शाखाओं को लेकर कार्य योजना बनाई गई।

अजीतसिंह छिंछास का प्रेरक संकल्प

सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील के छिंछास गांव के अजीतसिंह ने अनूठा संकल्प लिया है। गुड़गांव में नौकरी कर रहे अजीतसिंह ने यथार्थ वेल्फेयर ट्रस्ट बनाकर 51000 पौधे लगाने का सकंल्प लिया है और संकल्प पूरा होने तक नंगे पैर रहने का निर्णय लिया है। इन्होंने शुरूआत अपने गांव से की और गांव में स्थित रामदेव जी की बणी में हजारों पौधे लगाकर उसे सुंदर व हरा-भरा बनाया है। विगत 7 जुलाई को इन्होंने इसी बणी (ओरण) में 700 पौधे अपने साथियों के सहयोग से लगाये। ये प्रति शनिवार रविवार की छुट्टी को अपने गांव आते हैं और पुराने लगाये पौधों की सार संभाल के साथ नये पौधे लगाते हैं। गांव की सभी जातियों के युवा इसका सहयोग कर रहे हैं।

पत्नी की स्मृति में बनवाया विद्यालय

भीनमाल के निकट स्थित भागलभीम निवासी 75 वर्षीय पहाड़सिंह ने अपनी दिवंगत पत्नी सुमन कंवर की स्मृति में 5 बीघा जमीन विद्यालय को दी एवं उसी जमीन पर एक करोड़ रु. खर्च कर विद्यालय का निर्माण करवाया। ६०० विद्यार्थियों वाले इस विद्यालय के लिए उन्होंने 12 कमरे, 6 शौचालय, चार दीवारी एवं पानी का टांका बनवाया है। पहाड़सिंह चौहान के इस सद्कार्य को क्षेत्र के सभी लोग प्रेरणादायी एवं सराहनीय बता रहे हैं।

पृष्ठ एक का शेष (विरासत बचाने....)

इस संपूर्ण कार्य में बसवा गांव के सभी जातियों के लोगों का उत्साहपूर्ण सहयोग मिल रहा है। लेकिन इस पूरे कार्य की पृष्ठभूमि में एक युवा शक्तिसिंह बांदीकुई का लंबा व प्रेरणादायी संघर्ष है। रेलवे में इस चबूतरे को तोड़कर वहां से रेल लाईन निकालने का निर्णय ले लिया था। लेकिन इस युवा ने 2006 से लगातार इसके लिए रेलवे के अधिकारियों, स्थानीय प्रशासन, राजनेताओं से संवाद किया। स्थान-स्थान पर अपनी बात को प्रभावी ढंग से रखा। स्थानीय ग्रामवासियों का सहयोग लिया और परिणामस्वरूप रेलवे को अपनी लाइन डालने का स्थान बदलना पड़ा। विरासत बचाने का ऐसा सुंदर संघर्ष प्रेरणादायी है।

पृष्ठ एक का शेष (जनप्रतिनिधियों से...)

3 जुलाई को जयपुर टीम पूर्व मंत्री व विधायक कालीचरण सर्राफ तथा पूर्व मंत्री व विधायक राजकुमार शर्मा से मिली। टीम बीकानेर ने श्रीडूंगरगढ विधायक गिरधारीलाल महिया से मिलकर सहयोग मांगा। 3 जुलाई को ही बालोतरा सिवाणा की टीम सिवाणा विधायक हमीर सिंह भायल से मिली। 4 जुलाई को बालतोरा टीम ने पचपदरा विधायक मदन प्रजापत से संपर्क किया। 6 जुलाई को जोधपुर (ग्रामीण) टीम ने सूरसागर विधायक सूर्यकांता व्यास, जोधपुर विधायक मनीषा पंवार व शेरगढ़ विधायक मीना कंवर जी से संपर्क किया। 6 जुलाई को ही बीकानेर टीम ने नोखा विधायक बिहारीलाल विश्नोई से संपर्क कर सहयोग मांगा। इस बीच 7 जुलाई को जयपुर प्रवास पर आये लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से भी मिलकर इन विसंगतियों को दूर करने में सहयोग मांगा। सिरोही टीम ने 30 जून को आबू पिण्डवाड़ा विधायक समाराम गरासिया से सम्पर्क किया। 8 जुलाई को जयपुर टीम ने विधायक सतीश पूनिया से मिलकर सहयोग मांगा। 11 जुलाई को जयपुर टीम पूर्व मंत्री पुष्पेन्द्रसिंह व विधायक सुरेश रावत से मिली। मुख्यमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों से मिलकर उन्हें भी पूरा विषय समझाया गया।

संपादकीय Column

शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष

भारतीय पंचांग के अनुसार माह के दो पक्ष होते हैं शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष। शुक्ल पक्ष का अर्थ होता है उजियारा पक्ष और कृष्ण पक्ष का अर्थ होता है अंधेरा पक्ष। सामान्य आकलन से हमें यूं लगता है कि माह के वे पंद्रह दिन जिनमें रात्रि में चंद्रमा का प्रकाश होता है उसे शुक्ल पक्ष कहा जाता है और जिन पंद्रह दिनों में रात अंधेरी होती है उसे कृष्ण पक्ष कहा जाता है। लेकिन वास्तव में क्या ऐसा होता है? यदि तिथियों के हिसाब से हम देखें तो अमावस्या के बाद एकम् से लेकर पूर्णिमा तक के पक्ष को शुक्ल पक्ष कहा जाता है और पूर्णिमा के बाद एकम् से लेकर अमावस्या तक के पखवाड़े को हम कृष्ण पक्ष कहते हैं। अब जरा विचार करें कि इन दो तिथियों के बाद रात्रि में प्रकाश की क्या स्थिति होती है। क्या वास्तव में जैसा हम सोचते हैं वैसा ही होता है या स्थिति कुछ भिन्न होती है? अमावस्या के दूसरे दिन से शुक्ल पक्ष प्रारंभ हो जाता है अर्थात प्रकाश वाली रात्रि प्रारंभ हो जाती है लेकिन व्यवहार में क्या ऐसा होता है? क्या अमावस्या के बाद एकम् की रात्रि को चंद्रमा प्रकाशित करता है? क्या द्वितीया को रात्रि भी प्रकाशित रहती है? वास्तव में तो एकम् को चांद के दिखाई देने की भी बहुत कम संभावना होती है। द्वितीया को भी प्रयास पूर्वक हमें पश्चिम क्षितिज में चंद्रमा के दर्शन होते हैं फिर भी हम इसे शुक्ल पक्ष कहते हैं। दूसरी तरफ पूर्णिमा के अगले दिन हमारी तिथि गणना के अनुसार कृष्ण पक्ष अर्थात अंधेरा पक्ष प्रारंभ होता है अर्थात रात अंधेरी होना प्रारंभ हो जाती है। लेकिन वास्तव में क्या ऐसा होता है? तो फिर हमारे मन में नया प्रश्न पैदा होता है कि क्या इनका नाम शुक्ल पक्ष या कृष्ण पक्ष रखना गलत है? क्या हमारा तिथि विज्ञान गलत है? लेकिन हमारा ऐसा सोचना भी समीचीन नहीं हो सकता क्योंकि भारतीय संस्कृति का प्रत्येक घटक जीवन युक्त मनीषियों द्वारा गढ़ा हुआ है जो परिस्थिति निरपेक्ष जीवन मूल्यों के ओतप्रोत थे। हालांकि परवर्ती लोगों ने मनीषी परंपरा के अवरूद्ध होने पर स्वार्थवश कुछ परिवर्तन अपनी सुविधा के अनुसार कर दिया है लेकिन फिर भी मूलभूत जीवन मूल्यों को बदला जाना संभव नहीं था। इसलिए आज भी इन सभी तथ्यों का मूल भी वे परिस्थिति निरपेक्ष जीवन मूल्य ही हैं। ऐसे में हमारा यह मानना धृष्टता ही होगी कि इन मनीषियों ने शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष का नामकरण गलत किया है। इसलिए हमें जानना चाहिए कि वास्तव में शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष क्या है। इसके लिए हमें इन्हीं पक्षों की प्रकृति को देखना चाहिए। अमावस्या की रात्रि घोर अंधेरी रात्रि होती है। इस दिन सूर्यास्त के साथ ही चंद्रमा भी अस्त हो जाता है इसलिए चंद्रमा का प्रभाव शून्य रहता है और पूरी रात्रि स्याह अंधेरी रहती है। लेकिन एकम् के दिन चंद्रमा सूर्यास्त के साथ नहीं बल्कि उसके कुछ समय बाद अस्त होता है। इसलिए कई बार एकम् को भी चंद्र दर्शन हो जाते हैं हालांकि सामान्यतया यह दुर्लभ ही होता है। द्वितीया को यह और देरी से अस्त होता है। इसलिए हम उस दिन आसानी से चंद्रदर्शन कर लेते हैं। तृतीया को इसका समय और बढ़ता है, चतुर्थी को और अधिक और यूं करते-करते रात्रि का प्रकाशित होने का क्रम बढ़ता जाता है तथा पूर्णिमा की रात्रि पूर्ण प्रकाशमान हो जाती है। कृष्ण पक्ष में ठीक इसके विपरीत होता है। शुक्ल पक्ष में जहां चंद्रास्त का समय रात दर रात बढ़ता जाता है और पूर्णिमा को चंद्रोदय सूर्यास्त के साथ ही हो जाता है वहीं पूर्णिमा के बाद चन्द्रोदय का समय रात-दर-रात आगे खिसकता जाता है, रात अंधेरी होती जाती है और अमावस्या को चन्द्रोदय सूर्योदय साथ-साथ होते हैं। ऐसे में पूरे दिन में सूर्य के प्रकाश में चन्द्रमा रहता है इसलिए रात स्याह अंधेरी रहती है। ऐसे में शुक्ल पक्ष का अर्थ प्रकाशमान रात्रि नहीं बल्कि प्रकाश की ओर बढ़ती रात्रि है। वहीं कृष्ण पक्ष का अर्थ अंधेरी रात्रि नहीं बल्कि अंधेरे की ओर कदम बढ़ा चुकी रात्रि है। यही संदेश हमारे मनीषी इस शुक्ल पक्ष या चन्द्र पक्ष के नामकरण से देना चाहते थे। अमावस्या के बाद की पहली रात्रि अंधेरे में अमावस्या से कुछ ही कम होती है फिर भी वह शुक्ल पक्ष का अंग बन चुकी है, क्योंकि वह अपने कदम प्रकाश की ओर बढ़ा चुकी है, और इसी प्रकार पूर्णिमा के बाद की पहली रात्रि पूर्णिमा के प्रकाश में न्यून सी कम होने के बावजूद कृष्ण पक्ष का हिस्सा बन जाती है क्योंकि वह उसकी गति अब अंधेरे की ओर है। यही मूलभूत संदेश हमारे मनीषी हमें देना चाहते हैं। शुक्ल पक्ष हमें यही प्रेरणा देता है कि हमारे जीवन में प्रकाश, न्याय, सत्य, धर्म आदि कितना है यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि हमारी गति किधर है यह महत्वपूर्ण है। यही सकारात्मकता है। हमारी संस्कृति अंधेरे की मात्रा से नहीं घबराती बल्कि अंधेरे को दूर करने के लिए किए जाने वाले प्रयास को आवश्यक मानती है। हमारा कदम किधर उठा है यह महत्वपूर्ण है। हम कब तक कर पायेंगे, कितना कर पायेंगे, यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि यह महत्वपूर्ण है कि हम किधर बढ़ रहे हैं। मात्रा का इतना महत्व नहीं है जितना दिशा का है। यही कर्म योग है। यही फलासक्ति से मुक्त होने की प्रेरणा है, यही निष्काम भाव की आधार भूमि है और श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी आधार भूमि पर कदम बढ़ाने का संदेश है, आयें हम भी कदम से कदम मिलाने को तत्पर होवें।

खरी-खरी...

शिक्षित, अशिक्षित और कुशिक्षित

आप शीर्षक देखकर थोड़ा असहज हो सकते हैं कि शिक्षित शब्द सुना है, अशिक्षित भी प्रचलन में है, लेकिन यह कुशिक्षित शब्द क्या है? क्या शिक्षा भी कभी 'कु' हो सकती है? शिक्षा को तो प्रकाश का पर्याय बताया जाता है। शिक्षा के उजियारे की बातें तो हम सब यत्र-तत्र, यदा-कदा सुनते ही रहते हैं और उजियारा कभी 'कु' भी हो सकता है क्या? यदि उजियारा कभी 'कु' नहीं हो सकता तो फिर शिक्षा 'कु' कैसे हो सकती है? और कैसे कोई व्यक्ति कुशिक्षित हो सकता है? तो देखने सुनने में यह बात अटपटी सी लग सकती है। असहज करने वाली हो सकती है लेकिन वास्तव में तो यह आज के युग ही सच्चाई है। आज के युग की ही नहीं बल्कि यह सभी युगों की सच्चाई है। जरा से गहन निरीक्षण की आवश्यकता है। हमें हर युग में शिक्षित एवं कुशिक्षित लोग मिल ही जायेंगे। वास्तव में तो शिक्षा अपने आपमें एक साधन है। वह साधन जो व्यक्ति को किसी वस्तु एवं परिस्थिति का परिपूर्ण आकलन करना सिखाता है। व्यक्ति की समझ एवं समझाईश को बढ़ाता है। उसी समझ और समझाईश के बल पर व्यक्ति ज्ञान को ग्रहण करता है और उसका प्रसारण भी करता है। इसलिए किसी भी साधन से सक्षम होना श्रेष्ठ बात है। साधन का अभाव तो सदैव अक्षम ही बनाता है या अक्षमता का ही द्योतक होता है। इसलिए शिक्षित होना श्रेष्ठता का द्योतक है। अशिक्षित होने का कभी समर्थन नहीं किया जा सकता। लेकिन कुशिक्षित होना अशिक्षित होने से भी अधिक घातक है। शिक्षा में तो रावण भी अपने समय के अग्रणी लोगों में था, उसे प्रकांड पंडित माना जाता है लेकिन उसकी वह शिक्षा सुशिक्षा तो नहीं बन पायी। शिक्षा में तो अश्वत्थामा अर्जुन के बराबर था लेकिन वह शिक्षा कुशिक्षा ही रही। कर्ण की शिक्षा भी कम नहीं थी इसीलिए तो भगवान कृष्ण अर्जुन को उनके सामने लाने से बचते रहे लेकिन उनकी शिक्षा भी सुशिक्षा नहीं बन पायी। लेकिन गड़बड़ क्या शिक्षा में थी? क्या कर्ण का शिक्षित होना गलत था, अश्वत्थामा का शिक्षित होना गलत था या रावण का शिक्षित होना गलत था? तो उत्तर निश्चित रूप से यही आएगा कि उनका शिक्षित होना गलत नहीं था बल्कि कुशिक्षित होना गलत था। उन्होंने शिक्षा तो पायी लेकिन उस शिक्षा को संभालना नहीं सीख पाये, कहां उपयोग करना है और कहां नहीं यह विवेक हासिल नहीं कर पाये इसीलिए प्रकांड विद्वान होते हुए भी रावण विनाश को प्राप्त हुआ। अश्वत्थामा कलंकित जीवन जीने को मजबूर हुआ एवं क्षत्रियत्व को धारण करने की क्षमता होते हुए भी कर्ण क्षत्रिय नहीं कहलाया। उसी कुशिक्षा का दौर आज भी है। जिस प्रकार अश्वत्थामा को दी गई शिक्षा के पीछे पिता की गरीबी के कारण उत्पन्न भौतिक अभाव की छाया सदा बनी रही और फिर उन भौतिक अभावों की पूर्ति एवं उन अभावों के कारण विकृत हुई मनोदशा उसे शिक्षित से कुशिक्षित बना गई। कर्ण को मिली उपेक्षा उसकी संपूर्ण शिक्षा पर हावी रही और उसे शिक्षित से कुशिक्षित बना दिया। इस प्रकार यदि शिक्षा का प्रेरक कोई सांसारिक अभाव बनता है तो वह संबंधित व्यक्ति की उस शिक्षा को कुशिक्षा का रूप दे देता है और परिणामत: वह व्यक्ति शिक्षित की उपेक्षा कुशिक्षित बन जाता है। आज हमारे आस-पास के वातावरण में ऐसे कुशिक्षित लोगों की भरमार है। आज हमें डॉक्टर पैसे के लिए भ्रूण हत्या का धंधा करता मिल जाता है। आज हमें कोई इंजीनियर पैसे के लिए लोगों के जीवन से खिलवाड़ करता मिल जाता है। दवा कंपनियों के लिए पैसे के लालच में बीमारियों के जीवाणु फैलाते वैज्ञानिक मिल जाते हैं। पैसे के लिए अधिकारियों को आम लोगों की मौत के सौदागर बनते देखते हैं। अनेक शिक्षित लोगों को अपराधों के नये-नये तरीके ईजाद करते देख रहे हैं। उच्च शिक्षित लोगों को अपने माता-पिता को घर से निकालते देख रहे हैं। उनके परिवारों में विखंडन होते देख रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.07.2019 से 29.07.2019 तक	प्राथमिक शाला, **थराद,** बनासकांठा
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	03.08.2019 से 05.08.2019 तक	राजपूत बोर्डिंग, **नवापुरा,** भावनगर
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	**फरीदाबाद,** एनसीआर, दिल्ली
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	09.08.2019 से 12.08.2019 तक	मूंछाला महादेव, **घोड़ा घाटी,** नाथद्वारा (राजसमंद)
5.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	बा श्री ऐसाबा चन्दनसिंह राजपूत कॉलेज, **सिद्धपुर,**गुजरात
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	**बनासकांठा**
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 12.08.2019 तक	**बीजापुर (कर्नाटक)**
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	आलोक आश्रम, बीजीए, **बाड़मेर** (श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन से जुड़े सहयोगियों के लिए)
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	खेतलाजी मंदिर, **मलावा,** रेवदर (सिरोही)
10.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	दुदेश्वर महादेव मंदिर, **जेरण,** भीनमाल (जालोर)
11.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	10.08.2019 से 13.08.2019 तक	**मैंगलोर** (कर्नाटक)
12.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	15.08.2019 से 18.08.2019 तक	**मुंबई** (महाराष्ट्र)
13.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक़	**मकराना** (नागौर)
14.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	मीरां मेदपाट भवन, **उदयपुर**
15.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	22.08.2019 से 25.08.2019 तक	**नोगामां,** (बांसवाड़ा)
16.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	दुर्जनसिंह की ढाणी, **भलूरी** (बीकानेर)
17.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	**जेठानिया** (जोधपुर)
18.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.08.2019 से 26.08.2019 तक	राजपूत छात्रावास, **डीडवाना** (नागौर)

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

नरेन्द्रसिंह बने अध्यक्ष

संघ के स्वयंसेवक नरेन्द्रसिंह तोगावास को नोखा स्थित राजपुरोहित सभा भवन में आयोजित स्वयंसेवी शिक्षण संस्था संघ की बैठक में नोखा क्षेत्र का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। बैठक में सरकार द्वारा स्वयंसेवी शिक्षण संस्थाओं के दमन के खिलाफ संगठित संघर्ष की आवश्यकता पर बल दिया गया।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री **नरेन्द्रसिंह तोगावास** को स्वयंसेवी शिक्षण संस्था संघ नोखा के अध्यक्ष बनाये जाने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : स्वयंसेवी शिक्षण संस्था संघ नोखा एवं समस्त मित्रगण।

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी नेवी

एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

प्रश्न समाज के उत्तर गीता से

श्री पहमहंस आश्रम शक्तेषगढ, चुनार, मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश) में पधारे हुए कतिपय भक्तों ने गीता से संदर्भित प्रश्नों की एक सूची महाराजश्री के समक्ष मई २००५ में प्रस्तुत की जिसका समाधान पूज्य महाराजश्री के श्रीमुख से प्रस्तुत है।

बन्धुओं!

आपने गीता से कुछ प्रश्न किये हैं, जिनमें प्रथम प्रश्न है—

प्रश्न १ :- मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर :- गीता मानव का आदि धर्मशास्त्र है। कल्प के आदि में, सृष्टि के आरम्भ में इसका प्रादुर्भाव हुआ है। यह परमात्मा के श्रीमुख की वाणी है, अपौरुषेय वाणी है। उस समय श्रुतज्ञान था। एक से दूसरा सुनता था, अपनी स्मृति में धारण करता था इसीलिए इस ज्ञान को स्मृति कहा जाता था। यही गीता आदि 'मनुस्मृति' है।

गीता में भगवान कहते हैं, "अर्जुन! त्रिगुणमयी प्रकृति गर्भ को धारण करने वाली माता है और मैं ही परमचेतन बीजरूप से पिता हूं, अन्य सभी तो निमित्त मात्र हैं। मनुष्य की उत्पत्ति परमात्मा से है। अध्याय १५ में भगवान कहते हैं—

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति॥ (गीता, १५/७)

अर्जुन! यह आत्मा मेरा विशुद्ध अंश है- उतना ही पावन जितना स्वयं भगवान। मनसहित इन्द्रियों के व्यापार को लेकर यह आत्मा एक शरीर को त्यागकर नवीन शरीर धारण कर लेता है। वायु गंध के स्थान से जिस प्रकार गन्ध को ग्रहण कर दूसरे स्थान पर वही खुशबू फैला देता है उसी प्रकार भूतादिकों का स्वामी आत्मा जिस शरीर को त्यागता है उसको त्यागते समय मनसहित इन्द्रियों के कार्य-कलाप को लेकर अगले नवीन शरीर में प्रवेश कर जाता है, वहां इन्हीं मनसहित इन्द्रियों के माध्यम से पुनः इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्त हो जाता है ; किन्तु,

उत्क्रामन्तं स्थितं भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः॥ (गीता, १५१०)

शरीर छोड़कर जाते हुए को, पुनः शरीर धारण करते हुए को, पुनः विषयों में प्रवृत्त होते हुए को 'विमूढा नानुपश्यन्ति'- मूढ़ लोग नहीं जानते, केवल ज्ञानरूपी नेत्रवाले ही भली प्रकार देख पाते हैं।

यहां मनुष्य की उत्पत्ति एक परमात्मा से ही है; क्योंकि मनसहित इन्द्रियों का व्यापार पशुओं में, पक्षियों में, जड़ वनस्पतियों में नहीं होता। मनसहित इन्द्रियों के व्यापार को लेकर यह आत्मा मानव-शरीर त्यागकर दूसरे शरीर को धारण करता है। सात्त्विक गुण के कार्यकाल में मृत्यु को प्राप्त हुआ पुरुष उन्नत देवयोनि प्राप्त करता है, देव अर्थात् दैवी सम्पद् से सम्पन्न विशुद्ध धर्मपरायण पुरुष के रूप में अवतरित होता है। राजसी गुण के कार्यकाल में मृत्यु को प्राप्त पुरुष सामान्य मानव होता है और तामसी गुण की बहुलता में मृत्यु को प्राप्त पुरुष पशु-पक्षी, कीट-पतंग इत्यादि अधम योनि प्राप्त कता है। यही इस शरीर का गन्ध है जिसे लेकर यह आत्मा अन्य शरीरों में स्थानान्तिरित होता है। इसी को भगवान ने गीता के पन्द्रहवें अध्याय के दूसरे श्लोक में कहा, 'कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके'- मनुष्य कर्मों के अनुसार बंधन तैयार करता है। मनुष्य का इस शरीर से उस शरीर में परिवर्तन की प्रक्रिया को हृदय स्थित आत्मा ही नियंत्रित करता है, जो मेरा विशुद्ध अंश है।

सृष्टि के आरम्भ में ज्योतिर्मय परमात्मा है। उसका ज्योतिर्मय अंश सूर्य कहलाता है, इसीलिए भगवान कहते हैं कि इश अविनाशी योग को मैंने कल्प के आदि में सूर्य से कहा। सूर्य ने वही उपदेश अपने पुत्र आदि मनु से कहा। मनु ने वह ज्ञान अपनी याददाश्त में धारण कर लिया और उसे सुरक्षित रखने के लिये अपने पुत्र इक्ष्वाकु से कहा, इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना। इस प्रकार परमात्मा के ज्योतिर्मय अंश से ही वह गीतोक्त ज्ञान प्रसारित हुआ। उसके द्वारा मनु ने जाना, मनु से इक्ष्वाकु और इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना। इस महत्त्वपूर्ण काल से यह ज्ञान सृष्टि में लुप्त हो गया था, याददाश्त चित्त से उतर गयी थी। योग तो अविनाशी है, कभी नष्ट नहीं होता। हां, हमारी समझ से ओझल हो गया था। हमारी याददाश्ता खो गयी थी।

भगवान से अर्जुन से कहा, "वही पुरातन योग मैं तेरे प्रति कहने जा रहा हूँ।" अनेक प्रश्न-परिप्रश्न के पश्चात् अर्जुन से कहा- 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा'- अच्युत! मेरा मोह से उत्पन्न अज्ञान नष्ट हो गया, मैं स्मृति को प्राप्त हुआ हूं, मैं आपके आदेश का पालन करूंगा। हताश अर्जुन ने धनुष उठा लिया और युद्ध में प्रवृत्त हो गया। उसे विजय मिली। सम्पूर्ण धर्मात्मा युधिष्ठिर राज्याभिषिक्त हुए, धर्मसाम्राज्य स्थापित हो गया और एक धर्मशास्त्र के रूप में गीता पुनः, पूर्ववत् प्रसारित हो गयी।

महर्षि वेदव्यास ने श्रुतज्ञान की परम्परा से अलग हटकर पूर्व के समस्त ज्ञान को लिपिबद्ध कर दिया- चारों वेद, भागवत महाभारत, ब्रह्मसूत्र और गीता। अंत में स्वयं ही उन्होंने बताया कि इनमें शास्त्र कौन है। 'किमन्यैःशास्त्रविस्तरैः'- अन्य शास्त्रों के विस्तार में जाने की क्या जरूरत है? यह अकेले ही सम्पूर्ण शास्त्र है। और इस गीताशास्त्र के अनुसार मनुष्य की उत्पत्ति परमात्मा से है।

प्रश्न २ :- धर्म के नाम पर कई मजहब, सम्प्रदाय प्रचलित हैं। जिनमें रहन-सहन, खान-पान, वेशभषा, शादी-विवाह आदि सामाजिक नियमों को लगभग दो हजार वर्षों से धर्म की संज्ञा दे दी गयी है- क्या यही धर्म है? विभिन्न सम्प्रदायों में कई उप-सम्प्रदाय कैसे बने?

उत्तर :- सम्प्रदाय गुरु घराने के ट्रेड मार्क हैं। वस्तुतः ईश्वर एक है, उसे प्राप्त करने की विधि भी एक ही है। उक्त नियत विधि से साधन करने से मार्ग में मिलनेवाला योगक्षेम एक-जैसा, सुविधा एक जैसी मिलती है और उन्हीं प्रभु के संरक्षण में चलते हुए प्राप्ति हुई तो उपलब्धि एक जैसी- उसी अव्यक्त, व्याप्त आत्मा का दर्शन और स्थिति। इस प्रकार भगवत्पथ में कोई सम्प्रदाय हो ही नहीं सकता।

धर्म के नाम पर आजकल जो अनेकानेक सम्प्रदाय, मजहब फैले हैं यह सभी गुरु घरानों के नाम हैं। यह उन घरानों के पढ़ाने के तरीके हैं। आधी दूरी तक ये अलग-अलग प्रतीत होते हैं लेकिन जब साधना भगवान के निर्देशन में प्रवेश पा जाती है तो साधना एक, सुविधा एक-जैसी, निरीक्षण-परीक्षण और परिणाम एक जैसा ही रहता है। आप कान्वेण्ट के हजारों विद्यालयों की वेशभूषा पर दृष्टिपात् करें- कोई पीला है, कोई काला है, कोई श्वेत है तो कोई नीला, गुलाबी, आसमानी। आगे चलकर जब वही छात्र एम.ए., पीएच.डी. करते हैं तो शिक्षा का स्तर एक- जैसा परिणाम एक, किसी को कुछ अधिक अंक तो किसी को किंचित् न्यून! भगवत्पथ में कोई चाहकर भी अलग भगवान, अलग धर्म, भिन्न-भिन्न साधन बना ही नहीं सकता। अनुभवी सद्गुरु की शरण-सान्निध्य न मिलने से यह दूरियां बनी रहती हैं और उनके मिलते ही यह शान्त हो जाती हैं; क्योंकि वह महापुरुष हृदय से प्रेरणा देकर सही राह पर खड़ा कर देते हैं।

जहां तक रहन-सहन, शादी-विवाह का प्रश्न है, भगवद्भक्त को सृष्टि का प्रत्येक कार्य प्रभु में समपर्ण करके करना चाहिए। खेत में खुरपी चलाते हों तो समर्पण, अखाड़े में जाते हों तो समर्पण। नौकरी करें, व्यवसाय करें, राजनीति करें, लोहा सुधारें, चमड़ा सुधारें, सोना सुधारें- समर्पण और श्रद्धा के साथ कार्य आरम्भ करें। कार्य सम्पन्न होने पर नमन करें। प्रभु को नमन कर शयन करना, जागने पर नमन करना, चप्पल पहनना, वस्त्र पहनना अर्थात् हर कार्य में प्रभु स्मरण में आते रहें- यही धर्मव्रत है, आर्यव्रत है और सबको ऐसा करना ही चाहिए।

विवाह इत्यादि अवसरों पर कर्मकाण्ड और रस्म-रिवाजों की भिन्नता का आशय यह नहीं है कि कोई अलग धर्म हो गया। वह अपने-अपने ढंग से धर्म को, सत्य को, परमात्मा को साक्षी दे रहे हैं, अन्य कुछ भी नहीं। विविध देशों में प्रभु के समक्ष शपथ और साक्षी बनाने के तरीके अलग-अलग हैं; किन्तु प्रत्येक दशा में वे प्रभु का ही स्मरण करते हैं। वही व्यक्ति जब साधना के प्रशस्त पथ पर आ जाता है तो सबके लिए एक ही विधान है-

जागत में सुमिरन करे, सोवत में लव लाय।
सुरत डोर लागी रहे, तार टूट ना जाय॥

यही श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

अनन्येताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः॥ (८/१४)

अर्जुन! अनन्य अर्थात् अन्य न, मेरे अतिरिक्त अन्य किसी देवी-देवता को न भजते हुए जो मुझे भजता है, 'सततं-' निरन्तर भजता है, उसके लिए मैं सुलभ हूं। वह मुझे प्राप्त कर लेता है। वह क्षणभंगुर पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता।

महारानी....
पृष्ठ 2 का शेष

जयपुर में उनके निवास 'लिलिपुल' राजमहल से जब उनकी कार बाहर निकलती थी तो जनता, दुकानदार, रिक्शा चालक सब हाथ जोड़कर सम्मान में खड़े हा जाते थे। यातायात के सिपाही चौराहे पर वाहन रोकने की खुद पहल कर उनकी गाड़ी को पहले निकालता था। तो उक्त सभी को राजमाता मुस्कान के साथ हाथ जोड़कर अभिवादन करना नहीं भूलती थी। उनकी शालीनता के विश्व भर में लोग नतमस्तक थे। अपने मातहतों को भूमि, भवन नौकरी दिलाना, विदेश भेजना अथवा अन्य सिफारिश या सहायता करना उनकी सहृदयता का एक प्रतीक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक तनसिंहजी का उनके गहरा संपर्क रहा तथा वे साथ में सांसद भी रहे। संघ के द्वितीय संघ प्रमुख आयुवानसिंह जी उनके सान्निध्य में रहे एवं उनकी रुग्णता के समय राजमाता ने उनका सहयोग भी किया। 29 जुलाई 2009 को नब्बे वर्ष की अवस्था में उनका स्वर्गवास हुआ। अंतिम यात्रा में पूरा जयपुर शहर उमड़ पड़ा था। देश-विदेश के प्रतिष्ठित लोग, पत्रकार, फोटोग्राफर उनसे मिलने, आतिथ्य पाने, साक्षात्कार अथवा फोटो लेने को लालायित रहते थे। देश के सबसे बड़े शाही प्रतीक के रूप में राजमाता गायत्री देवी जनता के दिलों व इतिहास के पन्नों से कभी भुलायी नहीं जा सकती।

पृष्ठ एक का शेष (श्री क्षात्र पुरुषार्थ...)

पोकरण एवं फलोदी के विभिन्न क्षेत्रों में इसी प्रकार की बैठकें कर सकारात्मक क्रियाशीलता बढ़ाने के अभियान को आगे बढ़ाने का कार्यक्रम बनाया गया। इसी प्रकार की कार्ययोजना शिव तहसील की भी बनाई गई। 30 जून को प्रात: श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा लगाकर बैठक का विसर्जन किया गया। पोकरण के उपरांत सेखाला में शेरगढ़, लोहावट एवं ओसियां क्षेत्र की सहयोगी टीम की बैठक रखी गई। सेखाला के निकट स्थित गोगादेव जी मंदिर में आयोजित इस बैठक में भी इन तीनों विधानसभा क्षेत्रों में आगामी 3 माह में लगभग 10 बैठकों का कार्यक्रम बना एवं दायित्व लिए गए। 'EWS' आरक्षण को लेकर भी विस्तृत चर्चा की गई। 30 जून को अपरान्ह 12.30 बजे बालोतरा सिवाना क्षेत्र के आमंत्रित समाज बंधुओं की बैठक वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास बालोतरा में रखी गई। यहां भी पोकरण की भांति ही संगठन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। सभी छ: उद्देश्यों की महत्ता के बारे में बताया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ से इसकी संबद्धता एवं कार्यप्रणाली के बारे में भी जानकारी दी गई। 'EWS' आरक्षण बाबत विधायकों से संपर्क कर विधानसभा के माध्यम से इसकी विसंगतियों को दूर करने में सहयोग मांगने बाबत चर्चा की गई। पचपदरा व सिवाना विधायक से मिलकर बात करने के दायित्व लिए गए। दोनों विधानसभा क्षेत्रों में निचले स्तर पर छोटी-छोटी बैठकें कर फाउंडेशन के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए भी कार्ययोजना बनाई गई। 30 जून को ही सिरोही जिले के आबू पिण्डवाड़ा क्षेत्र के समाज बंधुओं की तहसील स्तरीय बैठक बामणवाड़ जी के निकट स्थित आरासणा अंबाजी मंदिर में रखी गई। बैठक में 15 जून को जालोर बैठक में तय कार्यक्रमानुसार स्थानीय दायित्वाधीन सहयोगी पहुंचे एवं फाउंडेशन के उद्देश्यों व क्रियाकलापों की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि समाज की युवा शक्ति के सामाजिक भाव को सकारात्मक रूप से क्रियाशील करने के लिए माननीय संघ प्रमुख श्री निर्देशन में यह संगठन संघ के अनुषांगिक संगठन के रूप में कार्य कर रहा है। सभी बैठकों में उपस्थित समाज बंधुओं ने अपने स्तर पर क्रियाशीलता को बढ़ाने में सहयोग का आश्वासन दिया। पोकरण की बैठक के बाद पोकरण फलोदी क्षेत्र की एवं बालोतरा की बैठक के बाद बालोतरा सिवाणा की कोर टीम गठित की गई।

इसी क्रम में 6 जुलाई की शाम संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में जयपुर की विद्याधरनगर विधानसभा क्षेत्र के आमंत्रित सहयोगियों की बैठक रखी गई। बैठक में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के उद्देश्यों, पृष्ठभूमि, भूमिका एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। क्षेत्र में वार्डवार बैठकें कर सभी समाजबंधुओं तक इसके संदेश को पहुंचाने की योजना बनी। ऐसी बैठकों में आने वाले सकारात्मक रुझान वाले युवाओं से संपर्क बढ़ाकर उन्हें टीम में शामिल करने को लेकर भी सहमति बनी। आर्थिक आधार पर आरक्षण की विसंगतियों बाबत विधानसभा सत्र के दौरान विधायकों से मिलने के लिए टीमें गठित की गई। 7 जुलाई को ही सीकर टीम द्वारा लोसल के आस पास की सात ग्राम पंचायतों के आमंत्रित सहयोगियों की बैठक लोसल में रखी। वहां भी फाउण्डेशन के बारे में अपेक्षित जानकारी देने के उपरांत इस क्षेत्र में कार्य को गति देने को लेकर चर्चा की गई। सातों पंचायतों में पंचायतवार बैठकें करने का कार्यक्रम बना एवं तद्नुसार दायित्व लिए गए। यहां भी आर्थिक आधार पर आरक्षण को लेकर चर्चा की गई एवं इस हेतु सकारात्मक क्रियाशीलता की जानकारी दी गई। 7 जुलाई को ही शाम को नागौर जिला मुख्यालय पर समाज बंधुओं से चर्चा कर नागौर में फाउण्डेशन का काम प्रारंभ करने की रूप रेखा तय की गई। नागौर जिले को दो भागों में बांटकर दो अलग-अलग टीमें बनाने पर सहमति बनी। नागौर, जायल, खींवसर, मेड़ता, डेगाना, मुण्डवा, रिंया बड़ी आदि क्षेत्रों की बैठक 27 जुलाई की शाम अमर राजपूत छात्रावास नागौर में रखनी तय हुई। इस हेतु संभावित सभागियों की सूची बनाने एवं उन्हें सूचित करने के दायित्व लिए गए। 7 जुलाई को ही पोकरण फलोदी टीम द्वारा फलसूण्ड क्षेत्र की फलसूंड, मानासर, भूरजगढ़, स्वामी की ढाणी पंचायतों के सहयोगियों की बैठक रखी गई जिसमें पंचायतवार एक-एक व्यक्ति को दायित्व देकर क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन का संदेश घर-घर तक पहुंचाने का कार्यक्रम बना।

टीम पोकरण फलोदी

हरिसिंह सांकड़ा, लखसिंह सनावड़ा,, उम्मेदसिंह एका, इन्द्रजीतसिंह छायण, आनंद सिंह फलसूण्ड, जेठूसिंह अकली, मांगूसिंह बोडाणा, वीरेन्द्रसिंह आसकन्द्रा। जेठू सिंह सिड्डा, रविराजसिंह अवाय।

टीम बालोतरा-सिवाणा

कानसिंह डाभड, देवीसिंह कीतपाला, भैरुसिंह डण्डाली, नरेन्द्रसिंह सिवाणा, जितेन्द्रपालसिंह गुड़ानाल, मंगलसिंह बिठुजा, छैलसिंह अराबा, जोगसिंह नौसर, प्रवीणसिंह सिणधरी, महेन्द्रसिंह रतरेड़ी।

पृष्ठ 4 का शेष (शिक्षित, कुशिक्षित...)

अपनी छोटी-छोटी भौतिक सुविधाओं या मन की तुच्छ कामनाओं के लिए मानवता का गला घोंटते हुए देख रहे हैं। अपने तुच्छ से अहंकार के लिए इंसानियत को छोड़ते हुए देख रहे हैं। यह सब अशिक्षित नहीं बल्कि कुशिक्षित लोग कर रहे हैं। ऐसे में कई बार प्रश्न उठ ही जाता है कि ऐसी शिक्षा से क्या फायदा? लेकिन यहां हमें स्पष्ट हो जाना चाहिए कि यह शिक्षा नहीं कुशिक्षा है। क्योंकि यह शिक्षा कुंती जैसी मां के नियंत्रण के अभाव में पनपती है इसीलिए उसी मां की संतान होने के बावजूद कर्ण और युधिष्ठिर की शिक्षा में इतना बड़ा अंतर रह जाता है। इस प्रकार शिक्षा कुशिक्षा तब ही नहीं बन सकती है जब उस पर परंपराओं का नियंत्रण हो, संस्कृति का नियंत्रण हो, सद्पुरुषों का नियंत्रण हो और एक शब्द में कहें तो उस पर संस्कारों का नियंत्रण हो। इसीलिए हमारे यहां शिक्षा और संस्कार के शब्द युग्म का प्रचलन रहा है। लेकिन दुर्भाग्य से आज यह युग्म टूट गया और संस्कारों पर शिक्षा महत्व पा गई है। इसीलिए कुशिक्षित लोगों के हमारे यहां दुर्लभ रहने वाले उदाहरण आम होते जा रहे हैं और फिर ऐसे में स्वाभाविक ही प्रतिक्रिया निकल जाती है कि ऐसी शिक्षा से तो अशिक्षा भली। ऐसे पढ़े लिखों से तो अनपढ़ भले। अत: हमें यह समझ लेना आवश्यक है कि शिक्षा सदैव संस्कारों द्वारा नियंत्रित होनी चाहिए। इसके अभाव में हम नेता बनते हैं, अधिकारी बनते हैं या व्यवसायी बनते हैं तो उसका कोई लाभ होना तो दूर की बात होगी लेकिन हानि अवश्य हो जाएगी। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ सदैव शिक्षा पर संस्कारों पर तरजीह देता है। आयें हम सब भी शिक्षा को कुशिक्षा बनने से बचाने के लिए संस्कारों की शरण में जाना स्वीकार करें।

संघ प्रमुख श्री का जोधपुर प्रवास

माननीय संघ प्रमुख श्री अपने नियमित प्रवास कार्यक्रम के तहत 6 से 8 जुलाई तक जोधपुर प्रवास पर रहे। 6 को अपराह्न जोधपुर पहुंचने के पश्चात् संभागीय संघ कार्यालय 'तनायन' में स्थानीय स्वयंसेवकों से मिले। 6 की शाम को संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक रतनसिंह नंगली के पौत्र के विवाह में शामिल हुए। 7 जुलाई को प्रात: 7 बजे स्थानीय स्वयंसेवकों ने माननीय संघ प्रमुख श्री के सान्निध्य में साप्ताहिक शाखा लगाई। इस शाखा में प्रति सप्ताह पूज्य तनसिंहजी की आत्मकथनात्मक पुस्तक 'भिखारी की आत्मकथा' का पठन एवं चर्चा होती है। वर्तमान में 'तुम मां हो' प्रकरण पर चर्चा चल रही है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने बताया कि पूज्य तनसिंहजी की आद्यशक्ति मां भगवती पर अगाध श्रद्धा थी। उन्होंने आबू पर्वत शिविर की एक घटना की चर्चा करते हुए बताया कि एक स्वयं सेवक अत्यंत गंभीर बीमार हो गए। नाड़ी टूटने लगी थी। पूज्य तनसिंहजी ने मां से प्रार्थना की कि अगर यह ठीक हो गया तो जीवन भर मां की नित्य आराधना करेंगे। उनकी सर्वात्मना पुकार से वे ठीक हो गए और पूज्यश्री ने उस घटना को इस तरह लिया कि मां उनके पूजा-पाठ के वादे से संतुष्ट नहीं हुई बल्कि उनके लिए यह आवश्यक था और उसकी सीख देने के लिए ही यह घटना घटी। इसी घटना के बाद पूज्यश्री ने 'तुम सब जानती व्यथा हमारी' प्रार्थना व 'वो कौम न मिटने पाएगी' सहगीत की रचना की। संघ प्रमुखश्री ने बताया कि पूज्यश्री को जब संघ की बागडोर सौंपने के लिए उत्तराधिकारी की तलाश की चिंता हुई तो मां से प्रार्थना की और उसी प्रार्थना के परिणामस्वरूप मिले सूत्रों को 'साधना पथ' पुस्तक में संकलित किया और उन्हीं को सहयोगी ढूंढने की कसौटी बनाया।

शाखा के उपरांत स्थानीय कार्यालय की व्यवस्था संबंधी चर्चा की गई। 7 जुलाई को ही माननीय संघ प्रमुख श्री ओसियां स्थित स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज के आश्रम में पधारे एवं स्वामी जी के शिष्य व आश्रम के प्रभारी संत से आध्यात्मिक चर्चा की। 8 को प्रात : रेल द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान किया।

सांवलसिंह जी की पुण्यतिथि

पोकरण में संघ कार्य के पर्याय रहे एवं अनेकों लोगों को संघ मार्ग पर प्रवृत्त करने वाले स्व. सांवलसिंह सनावड़ा की प्रथम पुण्यतिथि 2 जुलाई को श्री दयाल राजपूत छात्रावास पोकरण में श्रद्धापूर्वक मनायी गई। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में जैसलमेर संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा, राजपूत सेवा समिति के अध्यक्ष राणीदानसिंह भाटी, दलपतसिंह पूनम नगर, गिरधारीसिंह धोळिया आदि ने सांवलसिंहजी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। श्रद्धांजलि सभा का संचालन संभाग प्रमुख पोकरण गणपतसिंह अवाय ने किया।

पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर को श्रद्धांजलि

देश के पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर की 12वीं पुण्य तिथि को 'जननायक स्थल' नई दिल्ली पर 8 जुलाई को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने उनके बारे में बोलते हुए कहा कि उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के इब्राहिम पट्टी के कृषक परिवार में जन्मे चन्द्रशेखर भारतीय राजनीति में युवा तुर्क के नाम से मशहूर हुए। उन्होंने खुद्दारी एवं सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वे ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्होंने कभी किसी मंत्री पद की शपथ नहीं ली बल्कि सीधे ही प्रधानमंत्री बने। कॉलेज के समय से ही सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय हुए चन्द्रशेखर 1951 सोशलिस्ट पार्टी के वर्कर के रूप में पूर्णकालिक राजनीतिज्ञ बने। उन्होंने कांग्रेस में रहते हुए इमरजेंसी का खुलकर विरोध किया। वी.पी. सिंह सरकार गिरने के बाद वे कांग्रेस के बाहरी समर्थन से प्रधानमंत्री बने लेकिन कांग्रेस के दबाव में काम करना स्वीकार नहीं किया। प्रधानमनंत्री पद से त्याग पत्र देने के बाद कांग्रेस के आग्रह के बावजूद वापिस नहीं लिया। वे प्रखर वक्ता, लोकप्रिय राजनेता, विद्वान लेखक एवं बेबाक समीक्षक थे।

डिफेंस एकेडमी का उद्घाटन

राजपूत सभा जयपुर द्वारा नवनिर्मित जगतपुरा छात्रावास में 07 जुलाई को एस.एम.एस. डिफेंस एकेडमी का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह में पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल मान्धातासिंह मुख्य अतिथि एवं ब्रिगेडियर अजीतसिंह सहित अनेक लोग विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। वक्ताओं ने समाज में शिक्षा एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने वाले ऐसे प्रयासों की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए अनुकरणीय बताया एवं समाज के युवाओं से इसका अधिकतम लाभ लेने का आग्रह किया। उद्घाटन समारोह के पश्चात छात्रों की एक सेमिनार आयोजित की गई जिसमें छात्रों को मूलभूत आवश्यकताओं, कौशल योजना, समय प्रबंधन, अध्ययन शैली आदि विषयों पर आवश्यक मार्ग दर्शन प्रदान किया गया।

मौर्योत्तर काल

सम्राट अशोक की मृत्यु के बाद विशाल मौर्य साम्राज्य को एक योग्य शासक की आवश्यकता थी, परन्तु अशोक के उत्तराधिकारी अयोग्य व निर्बल शासक सिद्ध हुए जिसके कारण वो प्रजा में अप्रिय होते गए। उनमें शासन के संचालन की योग्यता का सर्वथा अभाव था। मौर्य साम्राज्य के अधीन प्रान्तों में से कई प्रान्तों ने अपनी स्वंत्रता की घोषणा कर दी। ऐसे समय में अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ की उसके सेनापति पुष्यमित्र ने सैन्य निरीक्षण के समय हत्या कर मगध साम्राज्य पर अधिकार स्थापित कर लिया।

शुंग वंश : पुष्यमित्र ने 184 ई. पू. में शुंग वंश की नींव रखी। पुष्यमित्र के शासन काल की प्रमुख घटना भारत पर यवन आक्रमण थी। यवन सेना का नेतृत्व डेमेट्रियस कर रहा था। यवन सेना सम्पूर्ण उत्तर भारत के राज्यों को परास्त करती हुई राजधानी पाटलीपुत्र तक पहुंच गयी थी, पुष्य मित्र के योग्य संचालन में सेना ने भीषण संघर्ष के बाद यवनों को परास्त कर दिया और भागने पर मजबूर कर दिया। इस विजय के बाद पुष्यमित्र ने अश्वमेघ यज्ञ का सम्पादन किया। पुष्यमित्र के बाद उसका पुत्र अग्निमित्र शासक बना। वह अपने पिता की ही तरह योग्य शासक सिद्ध हुआ परन्तु वह अल्पकाल तक ही शासन कर पाया और मृत्यु को प्राप्त हो गया। अग्निमित्र के बाद शुंग वंश में थोड़े-थोड़े समय के लिए कई शासक बने। शुंग वंश का अंतिम शासक देवभूति था जो कि विलासी, अन्यायी, व्याभिचारी था जिसकी हत्या उसके मंत्री वसुदेव ने एक दासी पुत्र के हाथों करवा दी।

कण्व वंश : वसुदेव द्वारा 72 ई. पू. में कण्व वंश की स्थापना की गई। कण्व वंश के कुल चार शासकों ने मिलकर लगभग 45 वर्षों तक शासन किया जिनके शासन काल में मगध निरन्तर कमजोर होता चला गया। कण्व वंश का अंतिम शासक सुशर्मा था जो सातवाहन शासक सिमुक द्वारा परास्त किया गया और मार दिया गया। इसके साथ ही मगध साम्राज्य का सूर्य अस्तांचल की ओर चला गया।

सातवाहन वंश : मगध साम्राज्य के अवसान काल में उत्तर भारत में कोई प्रमुख राजनैतिक शक्ति शेष नहीं थी जबकि दक्षिण भारत में एक साम्राज्य का उदय हो रहा था। सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक था। सातवाहन वंश में सातकर्णि, हाल पुलुमावि, यज्ञ सातकर्षि आदि अनेक योग्य शासक हुए लेकिन जो सर्वाधिक योग्य शासक सिद्ध हुआ वो था गौतमी पुत्र सातकर्णि। गौतमीपुत्र सातकर्णि के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना शकों पर विजय है। उसने शक शासक नहपान को परास्त कर शकों के विस्तार को रोक दिया था। सातवाहनों का राज्य मुख्य रूप से महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश व मध्यप्रदेश के कुछ भाग तक विस्तापित था।

चेदिवंश : मौर्य साम्राज्य के अवसान काल में कलिंग पुन: स्वतंत्र हो गया और पुन: महामेघवाहन वंश का वहां अधिकार हो गया। प्रथम शताब्दि ई.पू. के उत्तरार्द्ध में कलिंग में खारवेल शासक बना। वह चेदि वंश का एक प्रतापी शासक था। उसके हाथी गुम्फा अभिलेख से उसके बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। उसने कलिंग के विस्तार के लिए दिग्विजय की योजना बनाई और मुसिकों, राष्ट्रिकों, भोजकों, रथिकों को परास्त कर कलिंग का साम्राज्य विस्तार किया। खारवेल एक महान विजेता, लोक कल्याणकारी शासक, विद्वानों का आश्रयदाता, निर्माता और धर्म सहिष्णु शासक था। खारवेल के बाद चेदिवंश में किसी उल्लेखनीय शासक का वर्णन नहीं मिला है।

क्रमश:

कालूसिंह चौहान ने बनाया कीर्तिमान : लूणी क्षेत्र के गोलिया मगरा निवासी कालूसिंह चौहान ने जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में लगातार 6 मिनट तक शीर्ष भद्रासन कर विश्व कीर्तिमान बनाया है। चौहान विगत तीन वर्षों से जोधपुर में नि:शुल्क योग शिविर लगाकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती कैलाश कंवर पत्नी श्री मनीषसिंह नरुका के राजस्थान पुलिस सेवा में उपाधीक्षक के पद पर चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : ठा. विजयसिंह सोढा, उम्मेदसिंह, अर्जुनसिंह, प्रेमसिंह, प्रतापसिंह, मंगेजसिंह, पूर्णसिंह, उत्तमसिंह (उप सरपंच), रिछपालसिंह, सुल्तानसिंह, रूपसिंह एवं समस्त सोढ़ा परिवार, बगसेऊ बीकानेर

विजय कंस्ट्रक्शन कंपनी, सोढ़ा कृषि फार्म, बगसेऊ, रिद्धि सिद्धि फार्म, पेमासर, सोढ़ा कृषि फार्म, धुपालिया

श्री भवानी निकेतन में वृक्षारोपण व रक्तदान

जयपुर स्थित श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति परिसर में श्री भवानी निकेतन शिक्षा समिति, स्व. राजेन्द्रसिंह बगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट एवं रोटरी क्लब जयपुर (मिड टाउन) के संयुक्त तत्वावधान में 10 जुलाई को वृक्षारोपण एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के बॉटनिकल गार्डन में 100 विभिन्न प्रकार के औषधीय एवं छायादार वृक्ष लगाये गए। रक्तदान शिविर में 110 युनिट रक्त का संग्रहण किया गया। संस्था के पूर्व सचिव स्व. राजेन्द्रसिंह बगड़ की स्मृति में भजन एवं पुष्पांजलि का कार्यक्रम भी रखा गया। इस कार्यक्रम में राज्य के उच्च शिक्षा राज्य मंत्री भंवरसिंह भाटी सहित संस्था के पदाधिकारी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org